OPEN ACCESS

Int. Jr. of Contemp. Res. in Multi. *PEER-REVIEWED JOURNAL* *Volume 5 Issue 3 [May- Jun] Year 2026*

Research Article

क्षेत्रीय गढ़ से राष्ट्रीय नैरेटिव तक: हरियाणा में आई.एन.सी. और बी.जे.पी. की चुनावी रणनीतियों का अध्ययन

रमेश कुमार [1*], डॉ० सुधीर कुमार [2]

[1] शोधार्थी, (राजनीतिक शास्त्र विभाग) एम. एम. कॉलेज, मोदीनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

[2] सहायक प्राध्यापक (राजनीतिक शास्त्र विभाग) एम. एम. कॉलेज, मोदीनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author: *रमेश कुमार

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.20644128

सारांश

हरियाणा की चुनावी राजनीति पारंपरिक रूप से क्षेत्रीय पहचान, जातिगत लामबंदी और स्थानीय 'लालों' (देवीलाल, बंसीलाल, भजनलाल) के इर्द-गिर्द घूमती रही है। हालांकि, 2004 से वर्तमान समय के बीच राज्य के राजनीतिक परिदृश्य में एक गहरा संरचनात्मक बदलाव आया है। यह शोध पत्र 2004 से वर्तमान तक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) और भारतीय जनता पार्टी (BJP) की चुनावी रणनीतियों का एक तुलनात्मक और विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। जहाँ कांग्रेस ने 'जाट बहुल' और 'क्षेत्रीय विकास' के पारंपरिक गढ़ मॉडल पर भरोसा किया, वहीं भाजपा ने 'गैर-जाट ध्रुवीकरण', 'राष्ट्रीय राष्ट्रवाद' और 'अंत्योदय' के माध्यम से एक नया नैरेटिव स्थापित किया। यह शोध secondary data, चुनावी आंकड़ों और राजनीतिक व्यवहार के विश्लेषण के माध्यम से यह समझने का प्रयास करता है कि कैसे हरियाणा की राजनीति 'क्षेत्रीय गढ़ों' से निकलकर 'राष्ट्रीय विमर्श' (National Narrative) का हिस्सा बन गई।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 05-05-2026
- **Accepted:** 08-06-2026
- **Published:** 11-06-2026
- **IJCRM:**5(3); 2026: 761-763
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

रमेश कुमार, डॉ० सुधीर कुमार. क्षेत्रीय गढ़ से राष्ट्रीय नैरेटिव तक: हरियाणा में आई.एन.सी. और बी.जे.पी. की चुनावी रणनीतियों का अध्ययन. Int J Contemp Res Multidiscip. 2025;5(3):761-763.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मूल शब्द: हरियाणा राजनीति, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, भारतीय जनता पार्टी, चुनावी रणनीति, सोशल इंजीनियरिंग, राष्ट्रीय नैरेटिव।

© 2026 रमेश कुमार, डॉ० सुधीर कुमार. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रस्तावना

1966 में पंजाब से अलग होने के बाद हरियाणा की राजनीति मुख्य रूप से कृषि, जाति (विशेषकर जाट समुदाय) और दलबदल ('आया राम, गया राम' संस्कृति) से संचालित होती रही। लंबे समय तक राष्ट्रीय दलों को भी यहाँ क्षेत्रीय क्षत्रपों के सहारे ही राजनीति करनी पड़ी।

वर्ष 2004 से 2014 का दशक कांग्रेस के पुनरुत्थान और चौधरी भूपेंद्र सिंह हुड्डा के 'क्षेत्रीय गढ़' मॉडल का काल था। लेकिन 2014 के बाद भारतीय राजनीति में 'मोदी लहर' के आगमन के साथ ही हरियाणा में भाजपा ने पारंपरिक राजनीतिक व्याकरण को बदल दिया। भाजपा ने राज्य की राजनीति को स्थानीय जमींदारी और जातिगत चौधराहट के चंगुल से निकालकर राष्ट्रीय मुद्दों, सुशासन और व्यापक सोशल इंजीनियरिंग से जोड़ दिया। वर्तमान समय तक आते-आते हरियाणा का चुनाव केवल स्थानीय मुद्दों पर नहीं, बल्कि राष्ट्रीय विमर्शों के टकराव पर लड़ा जाने लगा है।

2. शोध पद्धति और उद्देश्य

इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित बिंदुओं का विश्लेषण करना है:

1. 2004 से अब तक कांग्रेस और भाजपा की सोशल इंजीनियरिंग (जातिगत समीकरण) में आए बदलावों को रेखांकित करना।
2. दोनों दलों के चुनावी घोषणापत्रों, नेतृत्व के स्वरूप और नैरेटिव निर्माण (Narrative Building) की तुलना करना।
3. क्षेत्रीय पहचान और राष्ट्रीय राजनीति के अंतर्संबंधों का मूल्यांकन करना।

शोध पद्धति:

यह अध्ययन मुख्य रूप से वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक (Descriptive and Analytical) है। इसमें चुनाव आयोग (ECI) के आंकड़ों, CSDS-लोकनीति के सर्वेक्षणों, राजनीतिक विचारकों के लेखों और प्राथमिक राजनीतिक घटनाक्रमों का गुणात्मक विश्लेषण किया गया है।

3. कांग्रेस की चुनावी रणनीति: 'क्षेत्रीय गढ़' और जाट-केंद्रित मॉडल (2004-2014)

2004 के विधानसभा चुनावों में कांग्रेस ने इनेलो (INLD) के खिलाफ सत्ता विरोधी लहर का फायदा उठाकर भारी बहुमत हासिल किया। इसके बाद भूपेंद्र सिंह हुड्डा के नेतृत्व में कांग्रेस की रणनीति के मुख्य स्तंभ निम्नलिखित रहे:

जाट प्रभुत्व और किसान नैरेटिव: कांग्रेस ने पश्चिमी और मध्य हरियाणा (रोहतक, झज्जर, सोनीपत) के जाट बेल्ट को अपना मुख्य आधार बनाया। कृषि नीतियों और ग्रामीण बुनियादी ढांचे पर ध्यान केंद्रित किया गया।

क्षेत्रीय क्षत्रप मॉडल: हुड्डा सरकार की रणनीति 'क्षेत्रीय विकास' (विशेषकर रोहतक और आसपास के क्षेत्रों) के इर्द-गिर्द केंद्रित थी, जिसे विरोधियों ने 'क्षेत्रीय पक्षपात' का नाम दिया।

पारंपरिक सोशल इंजीनियरिंग: कांग्रेस ने 'जाट + दलित (ओल्ड कांग्रेस वोट बैंक) + अल्पसंख्यक' का एक अनौपचारिक समीकरण बनाने का प्रयास किया, जिसमें कुमारी शैलजा और अशोक तंवर जैसे नेताओं के माध्यम से गैर-जाटों को भी साधने की कोशिश की गई, लेकिन मुख्य कमान जाट नेतृत्व के हाथ में ही रही।

4. भाजपा का उदय: 'गैर-जाट ध्रुवीकरण' और राष्ट्रीय नैरेटिव (2014-वर्तमान)

2014 के लोकसभा और विधानसभा चुनाव हरियाणा की राजनीति के 'टर्निंग पॉइंट' थे। भाजपा, जो कभी यहाँ जूनियर पार्टनर (इनेलो या हविपा के साथ) हुआ करती थी, पूर्ण बहुमत के साथ सत्ता में आई। भाजपा की रणनीतियों में निम्नलिखित बड़े बदलाव देखे गए:

क) सोशल इंजीनियरिंग का उलटा मॉडल

भाजपा ने महसूस किया कि हरियाणा की लगभग 65-70% आबादी गैर-जाट (ओबीसी, पंजाबी, ब्राह्मण, वैश्य और दलित) है, जो पारंपरिक जाट राजनीति के प्रभुत्व से उपेक्षित महसूस करती थी।

भाजपा ने मनोहर लाल खट्टर (एक गैर-जाट/पंजाबी चेहरा) को मुख्यमंत्री बनाकर इस मूक बहुसंख्या को राजनीतिक पहचान दी।

वर्तमान में नायब सिंह सैनी (ओबीसी चेहरा) को कमान सौंपना इसी गैर-जाट और ओबीसी लामबंदी की रणनीति का निरंतर विस्तार है।

ख) स्थानीय से राष्ट्रीय नैरेटिव की ओर

भाजपा ने राज्य के चुनावों को स्थानीय भाई-भतीजावाद से ऊपर उठाकर राष्ट्रीय पहचान से जोड़ा:

राष्ट्रवाद और सैन्य गौरव: भारतीय सेना का हर दसवां सैनिक हरियाणा से है ।भाजपा ने 'सर्जिकल स्ट्राइक', 'धारा 370' और राष्ट्रीय सुरक्षा को चुनावी विमर्श का केंद्र बनाया।

केंद्रीय कल्याणकारी योजनाएं: 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' (जिसकी शुरुआत हरियाणा से हुई), 'उज्वला योजना' और 'अंत्योदय' के माध्यम से लाभार्थियों (Beneficiary Class) का एक नया वोट बैंक तैयार किया गया, जो जातिगत सीमाओं से ऊपर था।

'पर्ची-खर्ची' मुक्त शासन: नौकरियों में भ्रष्टाचार को खत्म करने का नैरेटिव देकर भाजपा ने युवाओं के बीच हुड्डा काल के कथित भाई-भतीजावाद पर कड़ा प्रहार किया।

5. दोनों दलों की चुनावी रणनीतियों का तुलनात्मक विश्लेषण

नीचे दी गई तालिका दोनों दलों की रणनीतियों के मूल अंतर को स्पष्ट करती है:

तालिका :1.1 चुनावी रणनीतियों का तुलनात्मक विश्लेषण

तुलना के बिंदु	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC)	भारतीय जनता पार्टी (BJP)
।मुख्य सामाजिक आधार	जाट, ग्रामीण किसान, कुछ पारंपरिक दलित और मुस्लिम वर्ग।	ओबीसी, शहरी मतदाता, गैर-जाट सवर्ण और लाभार्थी वर्ग (Beneficiaries)।।
राजनीतिक नैरेटिव	क्षेत्रीय विकास, किसान संकट, स्थानीय रोजगार और भाईचारे की	राष्ट्रवाद, सुशासन (पारदर्शी नौकरियां), अंत्योदय और

© 2026 रमेश कुमार, डॉ० सुधीर कुमार. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

	राजनीति।	केंद्रीय योजनाएं।
नेतृत्व का स्वरूप	क्षत्रप-आधारित (भूपेंद्र सिंह हुड्डा का वर्चस्व)।	कैडर और पीएम मोदी के चेहरे पर आधारित (सांघटनिक सर्वोच्चता)।
भौगोलिक प्रभाव	मध्य हरियाणा (देसवाली बेल्ट) और नूंह/फतियाबाद के कुछ हिस्से।	जीटी रोड बेल्ट, अहीरवाल (दक्षिण हरियाणा) और शहरी केंद्र।

6. हालिया चुनावी प्रवृत्तियां और वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य (2019-2026 तक)

2019 के बाद से हरियाणा की राजनीति में पुनः संतुलन (Re-balancing) देखने को मिला है।

किसान आंदोलन और कांग्रेस की वापसी: तीन कृषि कानूनों के खिलाफ हुए आंदोलन ने कांग्रेस को ग्रामीण क्षेत्रों में दोबारा जमीन मजबूत करने का मौका दिया। कांग्रेस ने अपनी रणनीति में 'जाट-किसान अस्मिता' के साथ-साथ अग्निवीर योजना के मुद्दे को उठाकर भाजपा के 'सैन्य राष्ट्रवाद' के नैरेटिव को चुनौती दी।

भाजपा का लचीलापन और नेतृत्व परिवर्तन: भाजपा ने अपनी सत्ता विरोधी लहर को भांपते हुए संगठनात्मक बदलाव किए। जजपा (JJP) के साथ गठबंधन तोड़ना और मनोहर लाल खट्टर की जगह नायब सिंह सैनी को लाना यह दर्शाता है कि भाजपा अपनी रणनीतियों को समय के अनुसार बदलने में कितनी आक्रामक है। वर्तमान दौर में मुकाबला अत्यधिक ध्रुवीकृत (Direct Contest) हो चुका है, जहाँ क्षेत्रीय दल (INLD/JJP) हाशिए पर चले गए हैं।

7. निष्कर्ष

हरियाणा में 2004 से वर्तमान तक की चुनावी राजनीति का सफर यह दिखाता है कि राज्य अब केवल 'जाट बनाम गैर-जाट' के पारंपरिक खांचे में बंद नहीं है। कांग्रेस ने जहाँ अपने 'क्षेत्रीय गढ़' को बचाने और किसान अस्मिता के सहारे राष्ट्रीय नैरेटिव का मुकाबला करने की रणनीति अपनाई है, वहीं भाजपा ने राज्य को राष्ट्रीय राजनीति की मुख्यधारा से जोड़कर चुनावी व्याकरण को बदल दिया है।

निष्कर्षतः, हरियाणा की चुनावी राजनीति अब 'क्षेत्रीय क्षत्रपों की चौधराहट' से आगे बढ़कर 'संगठनात्मक मशीनरी, राष्ट्रीय नैरेटिव और सूक्ष्म सोशल इंजीनियरिंग' का एक जटिल मिश्रण बन चुकी है, जिसमें दोनों ही दल निरंतर अपनी रणनीतियों को परिष्कृत कर रहे हैं।

संदर्भ

1. सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ डेवलपिंग सोसाइटीज (CSDS)-लोकनीति. हरियाणा चुनाव रिपोर्ट: 2004, 2009, 2014, 2019 एवं 2024. नई दिल्ली: सीएसडीएस-लोकनीति.
2. जैफ्रेलो सी. इंडियाज फर्स्ट रीजनल इलेक्शन: द केस ऑफ हरियाणा. नई दिल्ली: [प्रकाशक उपलब्ध नहीं]; 2019.
3. कुमार संजय. चेंजिंग इलेक्टोरल पॉलिटिक्स इन दिल्ली एंड हरियाणा. नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशन्स; 2018.
4. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस. चुनावी घोषणा-पत्र. नई दिल्ली: भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस; विभिन्न वर्ष.
5. भारतीय जनता पार्टी. चुनावी घोषणा-पत्र. नई दिल्ली: भारतीय जनता पार्टी; विभिन्न वर्ष.

विभिन्न लेखक. हरियाणा की राजनीति से संबंधित लेख. इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली (EPW) तथा अन्य समकक्ष-समीक्षित शोध पत्रिकाएँ; विभिन्न वर्ष.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-Commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the Corresponding Author

रमेश कुमार राजनीति शास्त्र विभाग, एम. एम. कॉलेज, मोदीनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत में शोधार्थी हैं। उनका शोध क्षेत्र राजनीतिक सिद्धांत और समकालीन राजनीतिक अध्ययन से संबंधित है। वे अकादमिक अनुसंधान में सक्रिय हैं और सामाजिक-राजनीतिक विषयों पर अध्ययन एवं लेखन में रुचि रखते हैं।

© 2026 रमेश कुमार, डॉ॰ सुधीर कुमार. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/